चिरोजी : एक बहुउपयोगी वृक्ष
कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 27–29

चिरोजी : एक बहुउपयोगी वृक्ष

भूपेन्द्र सिंह[1] एंव रामकरण चौहान[2]
[1]वनवर्धन एवं कृषि वानिकी विभाग, [2]फल विज्ञान विभाग
उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़ (राजस्थान) भारत।
Email Id: b.singh96801@gmail.com

चिरोंजी (*बुचनानिया लन्जन*) आर्थिक और पौष्टिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण फल है। यह ऐनाकार्डिएसी परिवार का पौधा है। चिरोंजी आम तौर पर शुष्क पर्णपाती जंगलो में पाया जाने वाला वृक्ष है। यह मुख्य रूप से भारत और मलेशिया के गर्म एवं शुष्क क्षेंत्रों में पर्णपाती जंगलो में 900–1200 मीटर की ऊचाई तक के क्षेत्रो में पाया जाता है। भारत में यह वृक्ष मुख्यतः मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड़, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र में पाया जाता है।

चिरोंजी के उपयोग एंव गुण : यह बहुउद्देशीय वृक्ष स्थानीय समुदाय को भोजन, ईधन, चारा, लकड़ी और दवा प्रदान करता है। इसके सुखे और भुने हुये कर्नेल (दाना) को खाया जाता है। इसकी कर्नेल का तेल बादाम और जैतून के तेल का अच्छा विकल्प है। चिरोंजी के दाने में नमी (3.0%), वसा (59%), प्रोटीन (19-21.6%), स्टार्च/कार्बोहाइड्रेट (12.2%), रेशे (3.8%), केल्शियम (279 मि.ग्रा.) आयरन (8.5 मि.ग्रा.) थायमिन (0.69 मि.ग्रा.) एस्कोर्बिक अम्ल/विटामिन सी (5.0 मि.ग्रा.),राइबोफ्लेविन (0.53 मि.ग्रा.) नाइसिन (1.50 मि.ग्रा.) एवं वसा तेल (34.46%) प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

कर्नेल से निकले तेल का उपयोग सूजन को ठीक करने एवं छाल का उपयोग प्राकृतिक वार्निश के रूप में किया जाता है। कर्नेल का उपयोग रवीर एवं आचार तथा विभिन्न प्रकार की मिठाईयों में किया जाता है। पेड़ के तने से प्राप्त गोद का उपयोग दर्द निवारक, दस्त एवं वस्त्र उद्योग में किया जाता है। पत्तियों का उपयोग त्वचा सम्बन्धित रोग तथा तथा फल का उपयोग खासी एवं अस्थमा आदि रोगा के निवारण हेतु किया जाता है।

मृदा एवं जलवायु :

Krishi Kumbh
Online E-Magazine
www.KrishiKumbh.com

चिरोंजी कठिन परिस्थियतियों में उगने वाला पौधा है, जिसे खराब, पथरीली एवं अन्य प्रकार की मृदा में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। परन्तु जलमग्न मृदा में इसकी उचित बढ़वार नही होती तथा कभी–कभी पौधा मर भी जाता है। चिरोंजी की अच्छी बढ़वार हेतु दोमट एवं बलुई मिट्टी उपयोगी होती हैं, जिसके द्वारा उत्पादन में भी उचित वृद्वि होती है। चिरोंजी को उष्ण एवं उपोष्ण जलवायु वाले शुष्क क्षेत्रो में आसानी से उगाया जा सकता है।

प्रवर्धन :

मुख्यतः चिरोंजी के पौधों को बीज द्वारा प्रवर्धित किया जाता है। बीज द्वारा प्रवर्धित पौधों में 12–16 साल में फूल एवं फल आना शुरू होता है तथा फलों की गुणवत्ता मातृ वृक्ष से भिन्न होती है अतः इनके वृक्षों को वानस्पतिक विधि से तैयार किया जाना चाहिए। इसके एक वृक्ष पुराने बीजू पौधों को वानस्पतिक प्रवर्धन हेतु मूलर्वन्त के रूप में उपयोग किया जाता है।

वानस्पतिक प्रवर्धन : सोफ्ट वुड कलम द्वारा प्रवर्धन में एक साल पुराने मूलवृन्त पर जब नई पत्तियाँ आने लगे तब इस पर सोफ्ट वुड ग्राफ्टिंग करते है। तीन से चार माह पुरानी शाखा जिस पर शीर्षस्थ कली अच्छी हो उसी का मुख्यतः चुनाव करना चाहिये।

स्वस्थाने सोफ्ट वुड कलम विधिः यह विधि शुष्क क्षेत्रो एवं पथरीली मृदा में चिरोजी के बाग स्थपित करने हेतु अग्रणी साबित हुई है क्योकि इन परिस्थितियो में नर्सरी में तैंयार पौधों की मृत्यु दर सर्वाधिक होती है। इस प्रकार से कलम करने पर मृत्यु दर में भी कमी आती है एवं आसानी से बगीचा तैयार हो जाता है।

चिप बडींग : चिरोंजी के प्रसारण हेतु यह अच्छी विधि है। इस विधि में पुरानी पत्ती कक्षस्थ स्वरूप कलिका को चालू की मदद द्वारा लकड़ी के साथ निकाल कर मूलवृन्त पर जुलाई से अगस्त के माह में लगाया जाता है।

संस्थापन :

बीजू पौधो को सामान्यत 10X10 मीटर की दूरी पर लगाते है, जबकि कलभी पौधो को 8X8 मीटर की दूरी पर स्थापित किया जाना चाहिए। गड्ढ़े का आकार 1X1X1 मीटर होना चाहिए, जिससे मई–जून में खोद कर 1–2 माह के लिये खुला ही छोड़ देना चाहिए। गड्ढ़े को मानसून से पूर्व 25 किग्रा सडी हुई गोबर की खाद से 30 सेमी तक भर देना चाहिए। जूलाइ–अगस्त में पौधे को सुरक्षित एवं उचित तरीके से गड्ढ़े में लगा दिया जाता है।

कटाई –छटाई :

शुरूआत में काट–छाट पौधे को उचित का आकर देने हेतु की जाती है। मुख्य तने पर लगभग 85 सेमी तक शाखा को नही रखना चाहिए। इसके फलस्वरूप भविष्य में पौधे

की निराई–गुडाई तथा खाद देने की प्रक्रिया में आसानी होती है।

खाद एवं उर्वरक :

दस वर्ष पुराने पौधे को लगभग 100 किग्रा गोबर की खाद, 1 किग्रा नत्रजन, 500 ग्राम फास्फोरस तथा 750 ग्राम पोटाश प्रति पौधा प्रति वर्ष देना चाहिए। उपरोक्त खाद की मात्रा को मिट्टी में अच्छी तरह मिलाना चाहिए।

सिंचाई :

गर्मियो में 8–12 दिन के अन्तराल पर नये पौधे की सिंचाई करना उपयुक्त रहता है। फल लगते समय एवं बाद में उचित वृद्धि एवं उत्पादन हेतु 20–25 दिन के अन्तराल में सिंचाई करनी चाहिए।

चिरोंजी में अन्तवर्ती फसल :

चिरोंजी वृक्ष से मुख्यतः 10 वर्ष बाद लाभ मिलना प्रारम्भ होतो है। अतः कुछ ऐसी फसले वृक्षो के मध्य/साथ लगा सकते है, जिससे मुख्य फसल प्रभावित ना हो साथ ही अतिरिक्त आय भी प्राप्त हो सके। इस तरह की फसलो में मुख्यतः चना, मटर, मैथी, ग्वार, हजारा आदि लगा सकते है। जिससे जगह का भी उचित उपयोग एवं आय में वृद्धि हो सके।

फूल एवं फलन :

मुख्यतः जनवरी–फरवरी माह मे चिरोंजी के वृक्ष पर फूल आते है। कलमी पौधों में पांच वर्ष बाद फूल एवं फल आना प्रारम्भ हो जाते है।

फल तुड़ाई एवं उपज :

फल मुख्यतः अप्रैल–मई से पककर तैयार हो जाते है। एक स्वस्थ वृक्ष से 15–18 किग्रा फल प्राप्त कर सकते है।

बीमारी :

चिरोजी के वृक्ष मुख्यतः गमोसिस द्वारा अधिक प्रभावित होते है। इसके नियन्त्रण के लिये कॉपर ऑक्सी क्लोराइड (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का लेप मुख्य तने या अन्य प्रभावित भाग पर करना चाहिए।

मूल्य संवर्धन :

फलों को तोड़ने के बाद पानी में रगड़ कर बीजों को अलग कर दिया जाता है। उसके बाद बीज को सुखा लेते है। इसके बाद कर्नेल को सीड कोट से तोड़कर बाहर निकालते है।

विपणन :

चिरोजी मुख्यतः वन क्षेत्रो से आदिवासी जनजातियों द्वारा एकत्रित की जाती है। जिसे बाद में बहुत ही कम लागत में बड़े व्यापारियो को बेच दिया जाता है। इसका मुख्य कारण किसानों अथवा क्षेत्रिय लोगो का कर्नेल का उचित बाजारी मूल्य एवं माँग के बारे में जानकारी का ना होना है। अतः विपणन की उचित व्यवस्था करना अति आवश्यक है।

Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com